प्रकाशनार्थ

पटना, 24 अगस्त। आद्री स्थित पर्यावरण, ऊर्जा एवं जलवायु परिवर्तन केंद्र (सीईईसीसी) ने आज हरित कौशल विकास कार्यक्रम (जीएसडीपी) के प्रशिक्षुओं के लिए प्रथम विदाई सत्र का आयोजन किया। केंद्र द्वारा 9 जुलाई, 2018 से ही 'जल बजट एवं अंकेक्षण तथा अनुश्रवक : वायु एवं जल प्रदूषण' विषय पर दो पाठ्यक्रम चलाए जा रहे थे। विदित हो कि पर्यावरण, ऊर्जा एवं जलवायु परिवर्तन केंद्र (सीईईसीसी) जल प्रबंधन और जलवायु परिवर्तन पर पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय का एनविस संसाधन साझीदार भी है।

आयोजन में बिहार के माननीय उप-मुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी और पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की वरिष्ठ आर्थिक सलाहकार डॉ. आनंदी सुब्रामनियन की गरिमामय उपस्थिति रही। श्री मोदी ने कहा कि बिहार सरकार पर्यावरण एवं वन विभाग के नाम मे ''जलवायु परिवर्तन'' जोड़ रही है जो बताने के लिए पर्याप्त है कि जलवायु के बदलते तौर-तरीकों का अध्ययन कितना महत्वपूर्ण हो गया है। उन्होंने आने वाले त्योहार रक्षा बंधन पर अपनी बात केंद्रित की और आग्रह किया कि हर किसी को चाहिए कि वे पेड़ों को 'रक्षा सूत्र' बांधें क्योंकि पेड़ ही हमारे वास्तविक संरक्षक हैं।

डॉ. सुब्रामनियन ने परियोजना के बारे में मंत्रालय की दृष्टि का उल्लेख करते हुए बताया कि ''देश में जनसांख्यिक लाभांश और स्कूल छोड़ने वाले बच्चों की भारी संख्या ने हमें उन अपारंपरिक क्षेत्रों में युवक-युवतियों का कौशल बढ़ाने के लिए प्रेरित किया जिनमें श्रमबल की कमी है। और पर्यावरण में हो रहे क्षरण पर विचार करते हुए युवा वर्ग को हरित कौशल उपलब्ध कराना हमारा ध्येय बन गया''।

पर्यावरण, ऊर्जा एवं जलवायु परिवर्तन केंद्र (सीईईसीसी) के निदेशक डॉ. अबिनाथ मोहंती ने अपना विचार व्यक्त किया कि ''समुचित ढंग से कौशल नहीं उपलब्ध कराया जा रहा है इसलिए इस पाठ्यक्रम को हम आशा भरी नजरों से देख रहे हैं और पायलट बैच के प्रशिक्षुओं को बधाई दे रहे हैं''। बिहार पोल्युशन कंट्रोल बोर्ड के चेयरमैन डा. ए.के. घोष ने भी 'वाटर ऑडिटिंग और बजटिंग' पर अपने विचार रखे।

आयोजन के दौरान ''आद्रियन'' के नाम से एनविस केंद्र का न्यूजलेटर भी जारी किया गया जिसका अर्थ जलोत्पन्न होता है।

प्रशिक्षुओं ने भी माननीय अतिथियों के सामने पाठ्यक्रम के बारे में अपने अनुभव व्यक्त किए। हरित कौशल विकास परियोजना मंत्रालय की महत्वाकांक्षी परियोजना है जिसका लक्ष्य देश के युवा वर्ग को हरित कौशल उपलब्ध कराकर पर्यावरण संबंधी उन चुनौतियों का मुकाबला करना है जिनका सामना आज पूरी दुनिया कर रही है। 45 दिवसीय सघन प्रशिक्षण में बिहार के प्रमुख संस्थानों के संकाय सदस्यों और शोधकर्ताओं की कक्षाएं, जमीनी समाजसेवियों के साथ बातचीत और संबंधित क्षेत्र में क्षेत्रगत उन्मुखीकरण के जरिए व्यवहारिक एवं क्रियाशील प्रशिक्षण शामिल थे। मुख्य अतिथि श्री मोदी और माननीय अतिथि डॉ. सुब्रामनियन ने सभी 40 विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किया और बधाई दी। आद्री के निदेशक प्रोफेसर प्रभात पी घोष ने आगत अतिथियों का स्वागत किया।

(अबिनाश मोहंती)
निदेशक